International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 4, April- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |

संस्कृत व्याकरण के विभिन्न आयामों का अध्ययन

Sonia kumari,
B,ed, MA, MPHIL, M.ED, NET,HTET,CTET
Soniakumari7351@gmail.com

सार

विश्व में बोली जाने वाली सभी भाषाओं में संस्कृत , ग्रीक , लैटिन , मंडारिन आदि भाषाओं को प्राचीन एवं समृद्ध भाषा के तौर पर स्वीकार किया जाता है, पर इन सभी भाषाओं की तुलना में संस्कृत भाषा कई शताब्दियों से चली आ रही सभ्यता , संस्कृति एवं परम्परओं से सुसज्जित अपनी विशाल वाङ्मयराशि की समुपलब्धता के कारण बेहद समृद्ध एवं प्राचीन मानी जाती है । जिसका परम कारक संस्कृत व्याकरण के अध्ययन की सुदीर्घ परम्परा है । ऐतिहासिक तत्वान्वेषकों के द्वारा अनेक भुर्जपत्रों , पाण्डुलिपियों एवं ताम्रादि पत्रों तथा अभिलेखों के अन्वेषण कार्यों के बाद आर्यों द्वारा संगृहीत , ऋग्वेद को प्राचीनतम लिखित संग्रह स्वीकृत किया गया है संस्कृत भाषा की प्राचीनता, ऐतिहासिकता एवं इस भाषा के बेहद समृद्ध होने जैसे तथ्यों को परिपुष्ट करता है । इसीलिए संस्कृत व्याकरण वैदिक काल में ही स्वतंत्र विषय बन चुका था । अपनी इस विशेषता के कारण ही व्याकरण वेद का सर्वप्रमुख अंग माना जाता है । यही नहीं व्याकरणशास्त्र के लिखित तथा संगृहीत अन्य विविध ग्रन्थों की मौजूदगी से भाषा से जुड़ी अनेक बातों की समुचित जानकारी प्राप्त होती है , जो विश्व–भाषा पटल पर संस्कृत व्याकरण को अपनी विशिष्ट पहचान प्रदान करती है ।

संस्कृत व्याकरण का इतिहास पिछले ढाई हजार वर्ष से टीका टिप्पणी के माध्यम से अविच्छिन्न रूप में अग्रसर होता रहा है । इसे सजीव रखने में उन ज्ञात – अज्ञात सहस्रों विद्वानों का सहयोग रहा है , जिन्होंने अपना जीवन व्याकरण के अध्ययन – अध्यापन में बिताया । ऐतिहासिक रूप से महत्त्वपूर्ण प्रामाणिक निधियों को सँजोकर रखने व संस्कृत भाषा का विकास तथा व्यापक प्रचार – प्रसार व्याकरण से हुआ , और इसे शिखर पर ले जाने का कार्य पाणिनी, कात्यायन, पतञ्जलि आदि मूर्धन्य विद्वद्जनों ने किया ।

मुख्य शब्द

संस्कृत, व्याकरण, इतिहास,तक्षशिला

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 4, April- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |

भूमिका

व्याकरण शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के दो शब्दों वि और गण से मिलकर हुई है। वि का अर्थ है विभाजन या भेद और गण का अर्थ है समूह या वर्ग। इस प्रकार, व्याकरण शब्द का अर्थ है भाषा के नियमों का समूह या भाषा के नियमों का विभाजन।

व्याकरण शब्द का प्रयोग भाषा की संरचना और नियमों के अध्ययन के लिए किया जाता है। व्याकरण के अध्ययन से हम यह समझ सकते हैं कि भाषा के शब्द, वाक्य और वाक्यांश कैसे बनते हैं। व्याकरण के नियमों को जानने से हम अपनी भाषा को सही और सुंदर तरीके से बोल और लिख सकते हैं।

व्याकरण शब्द का प्रयोग संस्कृत भाषा में सबसे पहले हुआ। बाद में यह अन्य भारतीय भाषाओं में भी प्रचलित हुआ। आधुनिक हिंदी में भी व्याकरण शब्द का प्रयोग भाषा के नियमों के अध्ययन के लिए किया जाता है।

व्याकरण शब्द के कुछ अन्य अर्थ भी हैं। उदाहरण के लिए, व्याकरण का प्रयोग किसी विषय या क्षेत्र के नियमों या सिद्धांतों के समूह के लिए भी किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, व्यवसाय व्याकरण का अर्थ है व्यवसाय के नियमों या सिद्धांतों का समूह।

इस प्रकार, व्याकरण शब्द एक बहुआयामी शब्द है जिसका प्रयोग विभिन्न संदर्भों में किया जा सकता है।

शिक्षा, कल्प और व्याकरण वेदांगों के तीन प्रमुख अंग हैं।

शिक्षा वेदों के उच्चारण और स्वरों के ज्ञान से संबंधित है। इसमें स्वरों के उच्चारण का सही तरीका, मात्राओं का ज्ञान, यथास्थान स्वरों का प्रयोग आदि का वर्णन है।

कल्प वेदों के कर्मकांडों से संबंधित है। इसमें यज्ञों, संस्कारों, धर्मशास्त्रों, आदि का वर्णन है।

व्याकरण वेदों के शब्दों के संरचना और नियमों से संबंधित है। इसमें शब्दों के वर्गीकरण, संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, आदि का वर्णन है।

इन तीन अंगों का आपस में गहरा संबंध है। शिक्षा से कल्प और व्याकरण की नींव पड़ती है। कल्प से व्याकरण का विकास होता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 4, April- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |

शिक्षा कल्प व्याकरण का अर्थ है कि शिक्षा, कल्प और व्याकरण के बिना वेद का सही ज्ञान प्राप्त करना संभव नहीं है।

शिक्षा कल्प व्याकरण की आवश्यकता निम्नलिखित हैरू

शिक्षा के बिना वेद के मंत्रों का सही उच्चारण और अर्थ समझना संभव नहीं है।

कल्प के बिना वेद के कर्मकांडों का सही पालन करना संभव नहीं है।

व्याकरण के बिना वेद के शब्दों का सही अर्थ समझना संभव नहीं है।

शिक्षा कल्प व्याकरण के अध्ययन से प्राप्त होने वाले लाभ निम्नलिखित हैंरू

वेद का सही ज्ञान प्राप्त होता है।

वेद के मंत्रों का सही उच्चारण और अर्थ समझने की क्षमता बढ़ती है।

वेद के कर्मकांडों का सही पालन करने की क्षमता बढ़ती है।

वेद के शब्दों का सही अर्थ समझने की क्षमता बढ़ती है।

शिक्षा कल्प व्याकरण के अध्ययन के लिए निम्नलिखित ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिएरू

शिक्षा के लिएरू पाणिनी के अष्टाध्यायी, पतंजलि के महाभाष्य, काशिका, आदि।

कल्प के लिएरू आश्वलायन, शांखायन, बौधायन, आपस्तम्ब, आदि के श्रौतसूत्र, धर्मसूत्र, आदि।

व्याकरण के लिएरू पाणिनी के अष्टाध्यायी, पतंजलि के महाभाष्य, काशिका, आदि।

शिक्षा कल्प व्याकरण का अध्ययन करने से वेद का सही ज्ञान प्राप्त होता है और व्यक्ति एक आध्यात्मिक मार्ग पर चलने में सक्षम होता है।

निरुक्त का अर्थ है व्युत्पत्ति। यह वेदों में प्रयुक्त शब्दों के मूल अर्थों और उनके विकास का अध्ययन करता है। निरुक्त के माध्यम से हम वेदों के शब्दों को उनके प्राचीनतम रूप में समझ सकते हैं।

छंद वेदों में प्रयुक्त गीतों और मंत्रों की रचना का नियम है। छंदशास्त्र में अक्षरों, मात्राओं और लय का

अध्ययन किया जाता है। छंद के ज्ञान से हम वेदों के मंत्रों के सही अर्थ और प्रभाव को समझ सकते हैं।

ज्योतिष वेदों मे प्रयुक्त समय–निर्धारण के नियमों का अध्ययन करता है। ज्योतिष के माध्यम से हम वैदिक अनुष्ठानों और यज्ञों के लिए सही समय का निर्धारण कर सकते हैं।

इन तीनों वेदांगों का अध्ययन करने से हम वेदों का सही और गहन ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

निरुक्त, छंद और ज्योतिष एक–दूसरे से संबंधित हैं। निरुक्त के माध्यम से हम वेदों के शब्दों को समझ सकते हैं, छंद के माध्यम से हम वेदों की रचना को समझ सकते हैं, और ज्योतिष के माध्यम से हम वेदों के अनुष्ठानों को समझ सकते हैं।

तक्षशिला, काशी, उज्जयिनी, नालन्दा, वल्लभी, विक्रमशिला, काँचीपुरम जैसे संस्कृत भाषा–अध्ययन केन्द्रों की तात्कालीन विद्यमानता आज भी व्याकरण की पराकाष्ठा एवं प्रतिष्ठा के स्तर को जानने समझने के लिये पर्याप्त मानी जाती है । संस्कृत व्याकरण की इन्हीं महत्ताओं एवं प्रासंगिकताओं के कारण विश्व में बोली जाने वाली अन्य सभी भाषाओं के मध्य यह आज भी अपना विशेष स्थान रखती है । संक्षिप्त रूप से अपनी इन्हीं विशिष्टताओं के कारण संस्कृत व्याकरण का अध्ययन – अध्यापन न केवल हमारे देश में ही अपितु विश्व में चलायमान है ।

नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात – ये चार आधारभूत तथ्य यास्क (ई. पू. लगभग 700) के पूर्व ही व्याकरण में स्थान पा चुके थे । इस क्रम में पाणिनि (ई. पू. लगभग 550) के पहले कई व्याकरण लिखे जा चुके थे, जिनमें केवल आपिशलि और काशकृत्स्न के कुछ सूत्र आज उपलब्ध हैं । किंतु संस्कृत व्याकरण का क्रमबद्ध इतिहास पाणिनि से आरंभ होता है। व्याकरण शास्त्र का वृहद् इतिहास है किन्तु, महामुनि पाणिनि और उनके द्वारा प्रणीत अष्टाधयायी ही इसका केन्द्र बिन्दु हैं ।

पाणिनि ने अष्टाधयायी में लगभग चार हजार सूत्रों की रचनाकर भाषा के नियमों को व्यवस्थित किया, जिसमें पदों का संकलन, पदों का प्रकृति प्रत्यय विभाग एवं पदों की रचना आदि प्रमुख तत्त्व हैं। इन नियमों की पूर्ति के लिये धातुपाठ, गणपाठ तथा उणादि सूत्र भी पाणिनि ने बनाये। सूत्रों में उक्त, अनुक्त एवं दुरुक्त विषयों का विचार कर कात्यायन ने वार्तिक की रचना की। बाद में महामुनि पतञ्जलि ने महाभाष्य की रचना कर संस्कृत व्याकरण को पूर्णता प्रदान की ।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 4, April- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |

वर्तमान में संस्कृत व्याकरण का अध्ययन प्राचीन व्याकरण एवं नव्य व्याकरण के रूप में किया जाता है । प्राचीन व्याकरण में त्रिमुनि (पाणिनी, कात्यायन, पतञ्जलि) का अनिवार्यतः अधययन किया जात है । जिसमें सूत्र, वार्तिक एवं भाष्य का समावेश है । जबकि नव्य व्याकरण के अन्तर्गत प्रक्रिया क्रम के अनुसार शास्त्रों का अधययन किया जाता है जिसमें भट्टोजीदीक्षित, नागेश भट्ट आदि आचार्यों के ग्रन्थों का अधययन मुख्य है । प्राचीन व्याकरण एवं नव्य व्याकरण दो स्वतंत्र विषय हैं।

संस्कृत व्याकरण का अध्ययन एक जटिल और चुनौतीपूर्ण कार्य हो सकता है। हालांकि, यह अध्ययन संस्कृत भाषा को समझने और सीखने का एक महत्वपूर्ण तरीका है

महर्षि पाणिनि ने वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत दोनों के लिए अष्टाध्यायी की रचना की। अपने लगभग चार हजार सूत्रों में उन्होंने सदा के लिए संस्कृत भाषा का परिनिष्ठित कर दिया।

उनके प्रत्याहार, अनुबंध आदि गणित के नियमों की तरह सूक्ष्म और वैज्ञानिक हैं । उनके सूत्रों में व्याकरण और भाषाशास्त्र संबंधी अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों का समावेश है । सूत्रों के अर्थ, उदाहरण आदि समझाने के लिए कई वृत्तिग्रंथ लिखे गए थे जिनमें काशिका वृत्ति (छठी शताब्दी) महत्वपूर्ण है । पाणिनि के सूत्रों के क्रम बदलकर कुछ प्रक्रियाग्रंथ भी लिखे गए जिनमें धर्मकीर्ति (ग्यारहवीं शताब्दी) का रूपावतार, रामचंद्र (ई. 1400) की प्रक्रियाकौमुदी, भट्टोजि दीक्षित की सिद्धान्तकौमुदी और नारायण भट्ट (सोलहवीं शताब्दी) का प्रक्रियासर्वस्व उल्लेखनीय हैं । कात्यायन (ई. पू. लगभग 300) ने पाणिनि के सूत्रों पर लगभग 4295 वार्तिक लिखे । पाणिनि की तरह उनका भी ज्ञान व्यापक था । उन्होंने लोकजीवन के अनेक शब्दों का संस्कृत में समावेश किया और न्यायों तथा परिभाषाओं द्वारा व्याकरण का विचारक्षेत्र विस्तृत किया । कात्यायन के वार्तिकों पर पतंजलि (ई. पू. 150) ने महाभाष्य की रचना की । इसमें प्रायरू सभी दार्शनिक वादों के बीज हैं । इसकी शैली अनुपम है । इसपर अनेक टीकाएँ मिलती हैं जिनमें भर्तृहरिकी त्रिपदी, कैयट का प्रदीप और शेषनारायण का सूक्तिरत्नाकर प्रसिद्ध हैं। इसपर जिनेंद्रबुद्धि (लगभग 650 ई.) की काशिका विवरण पंजिका (न्यास) और हरदत्त (ई. 1200) की पदमंजरी उत्तम टीकाएँ हैं। काशिका की पद्धति पर लिखे गए ग्रंथों में भागवृत्ति (अनुपलब्ध), पुरुषोत्तमदेव (ग्यारहवीं शताब्दी) की भाषावृत्ति और भट्टोजि दीक्षित (ई. 1600) का शब्दकौस्तुभ मुख्य हैं । प्रक्रियाकौमुदी पर विट्ठलकृत प्रसाद और शेषकृष्णरचित प्रक्रिया प्रकाश पठनीय हैं। सिद्धांतकौमुदी की टीकाओं में प्रौढमनोरमा, तत्वबोधिनी और शब्देंदुशेखर उल्लेखनीय हैं। प्रौढमनोरमा पर हरि दीक्षित का शब्दरत्न भी प्रसिद्ध है । नागेश भट्ट (ई. 1700) के बाद व्याकरण का इतिहास धूमिल हो जाता है। टीकाग्रंथों पर टीकाएँ मिलती हैं। किसी किसी में न्यायशैली देख पड़ती है। पाणिनिसंप्रदाय के पिछले

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 4, April- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |

दो सौ वर्ष के प्रसिद्ध टीकाकारों में वैद्यनाथ पायुगुंड, विश्वेश्वर, ओरमभट्ट, भैरव मिश्र, राधवेंद्राचाय गजेंद्रगडकर, कृष्णमित्र, नित्यानंद पर्वतीय एवं जयदेव मिश्र के नाम उल्लेखनीय हैं ।

आर्यों के भारत आगमन के समय इनकी भाषा ईरानी से अधिक भिन्न नहीं थी, परंतु आर्येतर लोगों के संपर्क में आने पर अनेक प्रत्यक्ष परोक्ष प्रभावों के फलस्वरूप उसमें परिवर्तन आने लगे।

आय भाषा का प्राचीनतम रूप वैदिक संहिताएं हैं, जिनमें नियमितता के अभाव के कारण रूपों की विविधता है। वैदिक संहिताओं का काल 1200 दृ 900 ई. पू. के लगभग माना जाता है।

इनमें भाषा के दो रूप मिलते हैं, एक प्राचीन दूसरा नवीन। प्राचीन रूप अवेस्ता के निकट है। वेदों की भाषा काव्यात्मक होने के कारण बोल दृ चाल की भाषा से भिन्न है।

परवर्ती साहित्य ब्रह्मणग्रंथों तथा उपनिषदों आदि की भाषा अपेक्षाकृत व्यवस्थित है। उनमें न तो रुपाधिक्य है और न ही जटिलता। इन ग्रंथों की गद्य भाषा तत्कालीन बोलचाल की भाषा के निकट है।

संस्कृत व्याकरण के विभिन्न आयामों का अध्ययन

संस्कृत व्याकरण के विभिन्न आयामों का अध्ययन एक व्यापक और जटिल विषय है। इस विषय में व्याकरण के विभिन्न पहलुओं और सिद्धांतों का अध्ययन किया जाता है। संस्कृत व्याकरण के विभिन्न आयामों में निम्नलिखित शामिल हैंरू

शब्द–विन्यासरू यह शब्दों की संरचना और उनके परिवर्तन का अध्ययन करता है। संस्कृत में, शब्दों के निर्माण के लिए विभिन्न प्रकार के प्रत्यय और उपसर्गों का उपयोग किया जाता है।

वाक्य–विन्यास रू यह वाक्यों की संरचना और उनके नियमों का अध्ययन करता है। संस्कृत में, वाक्यों के निर्माण के लिए विभिन्न प्रकार के क्रियारूपों और पदों का उपयोग किया जाता है।

अर्थ–विज्ञानरू यह शब्दों और वाक्यों के अर्थ का अध्ययन करता है। संस्कृत में, शब्दों के अर्थ को निर्धारित करने के लिए विभिन्न प्रकार के नियमों और सिद्धांतों का उपयोग किया जाता है।

ध्वन्यात्मकी रू यह भाषा की ध्वनि प्रणाली का अध्ययन करता है। संस्कृत में, भाषा की ध्वनि प्रणाली को निर्धारित करने के लिए विभिन्न प्रकार के नियमों और सिद्धांतों का उपयोग किया जाता है।

व्याकरणिक इतिहास रू यह संस्कृत व्याकरण के विकास और परिवर्तन का अध्ययन करता है। संस्कृत

एक प्राचीन भाषा है, और इसके व्याकरण में समय के साथ कई बदलाव हुए हैं।

संस्कृत व्याकरण के विभिन्न आयामों का अध्ययन करने से हमें संस्कृत भाषा को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है। यह हमें संस्कृत साहित्य को समझने और उसमें से अधिकतम लाभ उठाने में भी मदद करता है।

संस्कृत व्याकरण के विभिन्न आयामों का अध्ययन करने के लिए विभिन्न प्रकार के तरीकों का उपयोग किया जा सकता है। इनमें शामिल हैंरू

पाठ्य पुस्तकों का अध्ययनरू संस्कृत व्याकरण को पाठ्य पुस्तकों में इस विषय के विभिन्न पहलुओं का विस्तृत विवरण दिया जाता है।

व्याकरण के व्याख्याताओं से मार्गदर्शन प्राप्त करनारू व्याकरण के व्याख्याताओं से मार्गदर्शन प्राप्त करने से हमें संस्कृत व्याकरण को समझने में मदद मिल सकती है।

अनुश अभ्यास करनारू संस्कृत व्याकरण का अभ्यास करने से हमें इस विषय में अपनी दक्षता बढ़ाने में मदद मिल सकती है।

संस्कृत व्याकरण का अध्ययन एक चुनौतीपूर्ण लेकिन फायदेमंद अनुभव हो सकता है। यह हमें संस्कृत भाषा को बेहतर ढंग से समझने और उससे अधिकतम लाभ उठाने में मदद करता है।

संस्कृत व्याकरण एक जटिल और विस्तृत विषय है, जिसे कई अलग–अलग आयामों में अध्ययन किया जा सकता है। इनमें से कुछ प्रमुख आयाम निम्नलिखित हैंरू

संरचनारू संस्कृत व्याकरण का पहला आयाम है इसकी संरचना। संस्कृत एक लिंग–भेदक और वचन–भेदक भाषा है, जिसमें क्रियाओं, विशेषणों और संज्ञाओं के लिए लिंग और वचन के कई रूप होते हैं। संस्कृत में कई अन्य विशिष्ट व्याकरणिक संरचनाएं भी हैं, जैसे कि क्रियाओं के लिए कारक और विभक्ति प्रणाली।

अथरूं संस्कृत व्याकरण का दूसरा आयाम है इसका अर्थ। संस्कृत शब्दों और वाक्यांशों का अर्थ निर्धारित करन के लिए, व्याकरण के कई नियमों को लागू किया जाना चाहिए। इन नियमों में शब्दों के अर्थ, वाक्यों की रचना और व्याकरणिक संरचनाओं का अर्थ शामिल है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 4, April- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |

प्रयोगरू संस्कृत व्याकरण का तीसरा आयाम है इसका प्रयोग। संस्कृत साहित्य में संस्कृत व्याकरण का उपयोग कैसे किया जाता है, इसका अध्ययन करके, हम इस भाषा की शक्ति और जटिलता को समझ सकते हैं। संस्कृत साहित्य में व्याकरण का अध्ययन करने से हमें संस्कृत भाषा के विकास और इतिहास के बारे में भी जानकारी मिल सकती है।

इन तीन प्रमुख आयामों के अलावा, संस्कृत व्याकरण का अध्ययन अन्य कई आयामों में भी किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, संस्कृत व्याकरण का अध्ययन इसके ऐतिहासिक विकास, अन्य भाषाओं के साथ इसके संबंधों और इसके आधुनिक अनुप्रयोगों के संदर्भ में भी किया जा सकता है।

संस्कृत व्याकरण का अध्ययन करने के लिए कई अलग–अलग स्रोत उपलब्ध हैं। इनमें पाठ्यपुस्तकें, व्याकरण ग्रंथ, व्याकरण संग्रह और ऑनलाइन संसाधन शामिल हैं। संस्कृत व्याकरण का अध्ययन करने के लिए सबसे अच्छा तरीका है कि किसी अनुभवी शिक्षक या विद्वान से मार्गदर्शन लिया जाए।

यहाँ संस्कृत व्याकरण के विभिन्न आयामों का अध्ययन करने के कुछ सुझाव दिए गए हैंरू

संरचनारू संस्कृत व्याकरण की संरचना को समझने के लिए, किसी अच्छी व्याकरण पाठ्यपुस्तक का अध्ययन करें। इस पाठ्यपुस्तक में संस्कृत शब्दों और वाक्यांशों की संरचना, लिंग, वचन और अन्य व्याकरणिक संरचनाओं के बारे में जानकारी होनी चाहिए।

अथरू संस्कृत शब्दों और वाक्यांशों का अर्थ निर्धारित करने के लिए, किसी अच्छी व्याकरण ग्रंथ का अध्ययन करें। इस ग्रंथ में संस्कृत शब्दों के अर्थ और वाक्यों की रचना के बारे में जानकारी होनी चाहिए।

प्रयोगरू संस्कृत साहित्य में संस्कृत व्याकरण का उपयोग कैसे किया जाता है, इसका अध्ययन करने के लिए, किसी अच्छे व्याकरण संग्रह का अध्ययन करें। इस संग्रह में संस्कृत साहित्य के विभिन्न ग्रंथों से उदाहरणों के साथ संस्कृत व्याकरण के नियमों का स्पष्टीकरण होना चाहिए।

संस्कृत व्याकरण का अध्ययन एक चुनौतीपूर्ण लेकिन पुरस्कृत अनुभव हो सकता है। इस भाषा की जटिल संरचना और अर्थ को समझने से हमें संस्कृत साहित्य और संस्कृति को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिल सकती है।

संस्कृत व्याकरण का अध्ययन कई आयामों में किया जा सकता है। इनमें से कुछ प्रमुख आयाम निम्नलिखित हैंरू

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 4, April- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |

शब्द–विज्ञान रू संस्कृत व्याकरण का यह सबसे महत्वपूर्ण आयाम है, जिसमें शब्दों की संरचना और उनकी रचना के नियमों का अध्ययन किया जाता है। संस्कृत में शब्दों की तीन प्रमुख किस्में होती हैंरू संज्ञा, सर्वनाम और क्रिया। इनके अलावा, संस्कृत में कुछ अन्य प्रकार के शब्द भी होते हैं, जैसे कि विशेषण, क्रियाविशेषण, अव्यय आदि।

वाक्य–विन्यासरू संस्कृत व्याकरण का यह आयाम वाक्यों की रचना और उनके अर्थ के नियमों का अध्ययन करता है। संस्कृत में वाक्यों की रचना मुख्य रूप से दो प्रकार की होती हैरू कर्ता–कर्म वाक्य और कर्ता–भाव वाक्य।

अर्थ–विज्ञान रू संस्कृत व्याकरण का यह आयाम शब्दों और वाक्यों के अर्थ के अध्ययन से संबंधित है। संस्कृत में शब्दों के अर्थ का निर्धारण उनके मूल अर्थ, संदर्भ और प्रयोग के आधार पर किया जाता है।

शैली–विज्ञानरू संस्कृत व्याकरण का यह आयाम संस्कृत भाषा की विभिन्न शैलियों, जैसे कि साहित्यिक शैली, धार्मिक शैली, दार्शनिक शैली आदि का अध्ययन करता है। प्रत्येक शैली में शब्दों और वाक्यों के प्रयोग के अपने–अपने नियम होते हैं।

इनके अलावा, संस्कृत व्याकरण का अध्ययन अन्य आयामों में भी किया जा सकता है, जैसे किरू

ध्वन्यात्मकी रू संस्कृत व्याकरण का यह आयाम संस्कृत भाषा के ध्वनों और उनके नियमों का अध्ययन करता है।

व्याकरणिक इतिहास रू संस्कृत व्याकरण का यह आयाम संस्कृत भाषा के व्याकरण के विकास का अध्ययन करता है।

व्याकरणिक तुलनात्मक अध्ययन रू संस्कृत व्याकरण का यह आयाम संस्कृत भाषा के व्याकरण का अन्य भाषाओं के व्याकरण के साथ तुलनात्मक अध्ययन करता है।

संस्कृत व्याकरण का अध्ययन इन विभिन्न आयामों से संस्कृत भाषा को गहराई से समझने में मदद मिलती है। यह अध्ययन संस्कृत भाषा को सीखने, लिखने और समझने में भी सहायक होता है।

यहाँ कुछ विशिष्ट उदाहरण दिए गए हैं कि संस्कृत व्याकरण के विभिन्न आयामों का अध्ययन कैसे किया जा सकता है

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 4, April- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |

शब्द–विज्ञान के अध्ययन में, हम संस्कृत के विभिन्न शब्दों की उत्पत्ति और उनका अर्थ समझ सकते हैं। उदाहरण के लिए, अच्छा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के अच्छ शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है उत्कृष्ट। अतः, अच्छा शब्द का अर्थ जो उत्कृष्ट हो होता है।

वाक्य–विन्यास के अध्ययन में, हम संस्कृत वाक्यों की रचना और उनके अर्थ के नियमों को समझ सकते हैं। उदाहरण के लिए, संस्कृत में कर्ता–कर्म वाक्यों में कर्ता हमेशा कर्ता कारक में होता है और कर्म हमेशा कर्म कारक में होता है। अतः, राम ने रावण को मारा वाक्य में राम कर्ता है, इसलिए वह कर्ता कारक में है, और रावण कर्म है, इसलिए वह कर्म कारक में है।

अर्थ–विज्ञान के अध्ययन में, हम संस्कृत शब्दों और वाक्यों के अर्थ को समझने के लिए उनके मूल अर्थ, संदर्भ और प्रयोग का विश्लेषण कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, संस्कृत में अर्थ शब्द का मूल अर्थ है उद्देश्य। हालांकि, यह शब्द कई अलग–अलग संदर्भों में प्रयोग किया जाता है, जैसे कि सामान्य अर्थ, वास्तविक अर्थ, अर्थव्यवस्था आदि।

शैली–विज्ञान के अध्ययन में, हम संस्कृत की विभिन्न शैलियों की विशेषताओं और उनके प्रयोग के नियमों को समझ सकते हैं। उदाहरण के लिए, संस्कृत साहित्यिक शैली में शब्दों और वाक्यों का प्रयोग अधिक सुंदर और प्रभावशाली होता है। इसके विपरीत, संस्कृत धार्मिक शैली में शब्दों और वाक्यों का प्रयोग अधिक सरल और स्पष्ट होता है।

निष्कर्ष

पाणिनी द्वारा संस्कृत को व्याकरण के नियमों में बांध दिए जाने पर व्यवहार की सरल भाषा पालि, प्राकृत तथा आधुनिक भारतीय भाषाओं के रूप में विकास करती चली गई। साथ ही संस्कृत भाषा भी बोलचाल की न रहने पर कुछ परिवर्तित होती गई, जिसकी झलक रामायण, महाभारत, पुराण दृ साहित्य और कालिदास के काव्यों में मिलती है। इस प्रकार प्राचीन आर्य भाषा के दो रूप है दृ वैदिक संस्कृत व लौकिक संस्कृत। इन दोनों रूपों में पर्याप्त अंतर पाया जाता है। इनमें अंतर का प्रधान कारण था दृ नया परिवेश।

संदर्भ

- संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ. उमाशंकर शर्मा ऋषि, प्रकाशक चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी–2021 ई.
- वाल्मीकीय रामायण, प्रथम एवं द्वितीय खण्ड, गीता प्रेस गोरखपुर–273005
- पाणिनीय शिक्षा, दयानंद सरस्वती, वैदिक यन्त्रालय, अजमेर
- कठोपनिषद्, आचार्य सुरेन्द्र शास्त्री, चौखम्बा
- चरक संहिता, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ. उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी